International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 25-08-2021, Accepted: 11-09-2021, Published: 26-09-2021
Volume 7, Issue 5, 2021, Page No. 120-121

गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' में पारिवारिक मूल्य

अर्चना शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–आलेख का ध्येय हिंदी साहित्य मात्र नहीं अपितु सम्पूर्ण वैश्विक वांग्मय के श्रेष्ठ महाकाव्य गोस्वामी तुलसीदास कृत "रामचरितमानस" में वर्णित पारिवारिक मूल्यों को लिपिबद्ध करना रहा है। वर्तमान समय में पल–पल खंडित और दरकते रिश्तों के विपरीत प्रभु श्री राम जी का आदर्श चरित्र निश्चित ही अनुकरणीय है। प्रस्तुत शोध–आलेख द्वारा "रामचरितमानस" के माध्यम से आदर्श पारिवारिक मूल्यों को प्रस्तुत करना ही मुख्य उद्देश्य रहा है।

मूल शब्दः राम, मूल्य, आदर्श, मर्यादा, गोस्वामी, लोकधर्म, संस्कार

प्रस्तावना

विश्व साहित्य के सर्वकालीन श्रेष्ठ साहित्यकारों में अग्रगण्य गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' भारतीय जनमानस की अमूल्य धरोहर है। यह पारिवारिक मूल्यों का सार्थक ग्रंथ है। गोस्वामी जी ने राम के दर्शन की व्यापकता में अपनी कला का संपूर्ण कौशल समर्पित कर दिया है– "सर्वकवि की दृष्टि जितनी व्यापक और सर्वग्राही होनी चाहिए, वैसी ही दृष्टि उनकी थी। समाज के विकृत स्वरूप को सार्थक दृष्टि देकर उन्होंने उसके उद्धार का उपाय भी सोचा। उनकी यह प्रतीति थी कि राम के बिना समाज का कल्याण नहीं हो सकता।"
'रामचरितमानस' में कैकेयी–संवाद में कैकेयी की कठोर आज्ञा पर श्री राम मधुर वाणी में शिष्टता व्यक्त करते हैं –

'सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी।
जो पितु मातु वचन अनुरागी।
तनय मातु पितु तोष निहारा।
दुर्लभ जननि सकल संसारा।'

गोस्वामी तुलसीदास ने – "राम के इसी स्वरूप की जन–जन में पहुँचाने का बीड़ा उठाया और अपने प्रयत्न में उन्हें सफलता मिली। ऐसी सफलता जैसी और हिंदी कवि को नहीं मिली।"
सात काण्डों में वर्णित 'रामचरितमानस' का द्वितीय काण्ड अर्थात् 'अयोध्याकाण्ड' समस्त रामचरितमानस का केंद्र बिंदु है। इसे रामचरितमानस का हृदय स्थल कहा जाता है। इसके अंतर्गत चित्रकूट की सभा एक ऐसी असाधारण एवं अति विशिष्ट घटना है, जिसके आधार पर मानवता, व्यवहार, कुशलता, स्नेह–शील, नीति, त्याग आदि का सुंदरतम् रूप मानव–जीवन के सम्मुख प्रकट हुआ है।
'मानस' में श्रीराम एवं भरत का आदर्श भ्रातृत्व विश्व बंधुत्व का दृष्टांत है –
"रामचरितमानस के सौंदर्य द्वारा तुलसीदास ने जनता को लोकधर्म की ओर जो फिर से आकर्षित किया, वह निष्फल नहीं हुआ। वैरागियों का सुधार चाहे उससे उतना न हुआ पर परोक्ष रूप से साधारण गृहस्थ जनता की प्रवृत्ति का बहुत कुछ संस्कार हुआ।"
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने साहित्य में नैतिक मूल्यों का समर्थन करते हुए ही मत अभिव्यक्त किया था कि 'मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ।'
गोस्वामी तुलसीदास का दृष्टिकोण कलापक्षी की अपेक्षा जीवन पक्षी था। स्मरण रहे कि राज्य का आधार–व्यक्ति समुदाय है किंतु मूल आधार परिवार ही है। रामराज्य तथा कल्याणकारी राज्य की अवधारणा तभी सार्थक सिद्ध होती है, जब पारिवारिक जीवन शुद्ध और मर्यादायुक्त हो।
पिता–पुत्र, पति–पत्नी, परिवार–समाज इत्यादि से ही कल्याणकारी राज्य की स्थापना होती है। वास्तव में श्रेष्ठ राष्ट्र का आधार भी यह ही है। भाई–भाई के मध्य स्नेह, विश्वास और प्रेम होना आवश्यक है। प्रभु श्रीराम भरत से कहते हैं –

'गुरु पितु–मातु स्वामि सिख पालें,
चलेहुं कुमग पग परहिं न खालें।
अस विचारि सब सोच विहाई,
पालहु अवध अवधि भरि जाई।।'

आदर्श साहित्य मानव को वास्तविक युगबोध प्रदान करने की क्षमता रखता है। यह सार्थक साहित्य का दायित्व और प्राण भी है। 'रामचरितमानस' के माध्यम से गोस्वामी तुलसीदास ने पारिवारिक संबंधों के मध्य समन्वय स्थापित करके एक आदर्श परिवार की उद्भावना की है। यह आदर्श वर्तमान युग में अनुकरणीय है।
'रामचरितमानस' में कौशल्या का राम के प्रति स्नेह आदर्श रूप में व्यक्त हुआ है। कौशल्या राम के वनगमन की बात सुनकर व्याकुल हो जाती हैं। वे धर्म–संकट में पड़कर राम को न तो रोक सकती हैं और न ही इसे स्वीकार सकती हैं –

जौं केवल पितु आयसुंताता।
तै जनि जाहु जानि बड़ि माता।।
जौं पितु मातु कहेउ वन जाना।
तौ कानन सत अवध समाना।।

राम वन–गमन के उपरांत चित्रकूट की सभा में भरत आत्म–ग्लानि व्यक्त करते हुए श्रीराम से अयोध्या लौटने की विनती करते हुए कहते हैं –

देव एक विनती सुनि मेरी।
उचित होई तस करब बहोरी।।
तिलक समाजु साजि सबु आना।

करिअ सुफल प्रभु जैं मनुमाना।।

भरत अग्रिम रूप से भावों को अभिव्यक्त करते हैं –

'सानुज पठइअ मोहि वन
कीजिअ सबहिं सनाथ।
तनरु फेरिअहिं बंधु दोउ,
नाथ चलौं मैं साथ।।

इसी प्रकार, गोस्वामी जी सीता जी के रूप में आदर्श भारतीय नारी की गरिमा प्रतिष्ठापित करते हैं। सीता जी जब श्रीराम के साथ वन जाने का आग्रह करती हैं तो वन के कष्ट बताकर प्रभु उन्हें घर पर रहने का आग्रह करते है । सीता जी वन के कष्टों की उपेक्षा कर साथ चलने का आग्रह करती हैं –

मैं सुकुमारि नाथ बन जोगु।
तुम्हहिं उचित तप मो कहु भोगू।।

वन–गमन हेतु लक्ष्मण एवं सीता जी प्रभु श्री राम जी संग प्रस्थान करते हैं तो संपूर्ण अयोध्यावासी व्याकुल होकर अनेक ढंग से प्रलाप करते हैं। जैसे – चकवा–चकवी और कमल, सूर्य के बिना दुःखी होते हैं, उसी प्रकार अयोध्यावासी दुःखी हो उठते हैं–

राम दरस हित नेम ब्रत,
लगे करन नर नारि।
मनहुँ कोक कोकी कमल,
दीन बिहीन तमारि।।

मुझे एक प्रसंग स्मरण हो आता है। सीताजी को तपस्विपनी वेष में देखकर राजा जनक का हृदय वात्सल्य प्रेम से उमड़ पड़ता है। उन्हें गर्व होता है कि उनकी पुत्री ने दोनों कुलों को पवित्र कर दिया –

तापस वेष जनक सिय देखी।
भयउ प्रेम परितोषु विसेषी।।
पुत्रि पवित्र किए कुल दोऊ।
सुजस धवल जगु कह सबु कोऊ।।

निष्कर्ष

अस्तु, गोस्वामी तुलसीदास का व्यक्तित्व समग्र जीवन बोध से युक्त सामाजिक साधना का परिणाम है। वर्तमान भौतिकवादी युग में जहाँ पारिवारिक–सामाजिक रिश्तों की मर्यादा का क्षरण हो रहा है जैसे – माता–पिता का अनादर, भाई–भाई की शत्रुता, पवित्र रिश्तों की मर्यादा का उल्लंघन इत्यादि। ऐसे घोर 'कलियुग' में 'रामचरितमानस' के पारिवारिक मूल्य ही हमारा मार्गदर्शन करते हैं। प्रासंगिकता के प्रश्न के संदर्भ में स्मरणीय है – "प्रासंगिकता–अप्रासंगिकता का संबंध किसी युग विशेष की प्रगतिशील चेतना के साथ जुड़ा होता है।" निश्चित रूप से 'रामचरितमानस' 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भारतीय सांस्कृतिक विरासत पर आधारित पारिवारिक मूल्यों का श्रेष्ठ, जीवंत एवं अनुकरणीय ग्रंथ है।

संदर्भ सुची

1. तुलसीः: उदयभानु सिंहः संस्करणः 1976, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–41
2. तुलसीः: उदयभानु सिंहः संस्करणः 1976, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–41
3. तुलसीः उदयभानु सिंहः संस्करणः 1976, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–169
4. कबीर एवं तुलसी की सामाजिक दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययनः सरिता रायः संस्करण रू 1993, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ–37